आनंद और ज्ञान

इन दोनों का आपस में सीधा-२ सम्बन्ध नहीं है. अज्ञानी भी आनंदित हो सकता है. उदहारण के लिए - ग्रहण का ही उदाहरण ले लीजिये, ऐसा अज्ञान है कि राहू- केतु उपग्रह को ग्रास लेते हैं और इस वज़ह से लोग दान करते हैं ताकि उपग्रह को राहत मिल सके. और ज़ाहिर है इसमें उनको आनंद आता होगा. जो ये तथ्य जानता है, स्वीकार करता है, उसके लिए इसमें आनंद जैसा कुछ भी नहीं है.

दुरव्यस्नों के सभी आनंद अज्ञानता पर आधारित हैं, पर वो आनंद तो हैं ही. दर-असल, आनंद या दुःख छोटे सन्दर्भ में ज्यादा प्रभावशाली शाबित होते हैं, जितना बड़ा सन्दर्भ कर दिया जाता है, प्रभाव उतना ही कम हो जाता है. तभी तो जब कोई दुःख होता है तो तुरंत समय सीमा बढ़ा कर उसका निदान सोच कर उसे कम करने की कोशिश की जाती है.

आनंद लेना है तो क्षणिक सोचो, दुःख कम करना है तो लम्बा सोचो.